अथ श्रीमहावीरपुराणकी विषयसूची.

विषय.	पृ. सं.
पहला अधिकार ॥ १ ॥	
मंगलाचरण	१
वक्ताके लक्षण	३
श्रोताके लक्षण	,,
दूसरा अधिकार ॥ २ ॥	
कथाका आरंभ, उसमें महावीर स्वामीका पहला पुरूरवा भीलका भव (जन्म)	५
पुरूरवा भीलका धर्म पालनेके फलसे पहले स्वर्गमें देव होना	६
उस देवको स्वर्गसे आकर अयोध्या नगरीमें श्रीऋषभ देवके पुत्र श्रीभरत-चक्रवर्तीके यहां मरीचि पुत्र होना	७
श्रीऋषभ देवको वैराग्य होके तप करनेके लिये वनमें जाकर दीक्षा लेना और उनके साथ मरीचि कच्छ वगैरः बहुतसे राजाओंका केवल स्वामीभक्तिसे वाह्यदीक्षाका लेना	,,
श्रीऋषभ देवको छह महीनेकी समाधि लगाते देख भूख प्यास आदिसे दुःखी मरीचि वगैरःको तपसे भ्रष्ट होके फलआदि खानेका उद्यम करना, ऐसा-देख वनदेवताको उनके प्रति मुनिभेषसे निन्य कार्य करनेसे दंडका भय दिखलाना	८
मरीचि आदिको मुनिभेष छोड संन्यासियोंका वेष धारण करना...	,,
श्रीऋषभदेवको केवल ज्ञान होना व उनके समोसरण (सभा) में जाकर कच्छादि भेषियोंका वास्तवमें मुनि होना	९
मरीचिको मिथ्यात कर्मके उदयसे त्रिदंडी होकर कपिलादि शिष्योंको सांख्य मतका उपदेश करना	,,
मरीचिका मरणके बाद पांचवे स्वर्गमें खोटे तपके फलसे देव होना	,,
उस देवको कपिल ब्राह्मणके घर जटिल नामका पुत्र होना	,,
फिर मिथ्या तपके फलसे पहले स्वर्गमें देव होना	,,
उस देवको भारद्वाज ब्राह्मणके घर पुष्पमित्र नामका पुत्र होना	,,

फिर भी मिथ्या तपसे उसी स्वर्गमें देव होना ”
उस देवको अग्निभूति ब्राह्मणके घर अग्निसह नामका पुत्र होना १०
फिर भी अज्ञानतपसे तीसरे स्वर्गमें देव होना ”
उस देवको गौतम ब्राह्मणके घर अग्निमित्र नामका पुत्र होना ... ... ”
फिर खोटे तपसे पांचवें स्वर्गमें देव होना ... ”
उसदेवको सालंकायन ब्राह्मणके घर भारद्वाज नामक पुत्र होना ... ... ”
फिर मिथ्यातपस्यासे उसी स्वर्गमें देव होना... ”

तीसरा अधिकर ॥ ३ ॥

पूर्वकहे हुए मरीचिके जीवको देव पर्यायसे चयकर अनेक योनियोंमें भटक शांडिल्य ब्राह्मणके घर स्थावर नामका पुत्र होना... ११
फिर खोटे तपसे पांचवें स्वर्गमें देव होना ... ”
उस देवको विश्वभूति राजाके घर विश्वनंदी नामका पुत्र होना ... ... ”
फिर तपसे खोटा निदान बंधकर दसवें स्वर्गमें देव होना १४
स्वर्गसे चयकर उस देवको प्रजापतिराजाके घर त्रिपृष्ठ नारायण होना १४
त्रिपृष्ठसे अश्वग्रीव प्रतिनारायणके मारे जानेपर उसे चक्ररत्नकी प्राप्ति होना १६
त्रिपृष्ठ नारायणको खोटे रौद्रध्यानके फलसे सातवें नरकमें जाना १७
उस नरकमें दुःख होनेसे विलाप करना ... १८

चौथा अधिकार ॥ ४ ॥

नरकसे निकल उसको वनिसिंह पहाड़पर सिंह होना १९
उस सिंहको पापके फलसे पहले नरकमें जन्म लेना ”
नरकसे निकल हिमवान् पर्वतपर फिर भी सिंह होना ... ... ”
उस सिंहको अजितंजयमुनिकर दिये गये उपदेशसे शांत चित्त होना २२
फिर व्रतोंके पालनेके फलसे पहले स्वर्गमें सिंहकेतु देव होना ... ... ”
उस देवको कनकपुंख राजाके घर कनकोज्ज्वल नामका पुत्र होना २३
फिर मुनिके उपदेशसे दीक्षा लेकर तपके प्रभावसे सातवें स्वर्गमें देव होना २५
उस देवको वज्रसेन राजाके घर हरिषेण नामका पुत्र होना ... ... ”

पांचवां अधिकार ॥ ५ ॥

हरिषेणराजाको मुनिके पास जिनदीक्षा लेना २७
तपके प्रभावसे दसवें स्वर्गमें देव होना ... २८
उस देवको सुमित्रराजाके घर प्रियमित्र नामका चक्री पुत्र होना २९
उसके चक्रादिरत्नोंका प्रगट होना ... ... ”
उस चक्रीका क्षेमंकर केवलीके उपदेससे मुनि होना ३२
तपके फलसे उसको बारवें स्वर्गमें जन्म लेना ”
उस देवको नंदिवर्धनराजाके घर नंद नामका पुत्र होना ३३

छठा अधिकार ॥ ६ ॥

उस नंदराजाको प्रोष्ठिल मुनिके उपदेशसे जिनदीक्षा लेना ३५
फिर तीर्थंकर पदको देनेवाली सोलह कारण भावनाओंको चिंतवन करना ३७
महान् तपके फलसे नंदमुनिको सोलवें स्वर्गमें इंद्र होना ३९

सातवां अधिकार ॥ ७ ॥

कुंडलपुर नगरका वर्णन ४३
उस नगरके स्वामी श्री सिद्धार्थमहाराजका वर्णन ”
उनकी महारानी त्रिसला (प्रियकारिणी) का वर्णन ४५
अंतके (चौवीसवें) तीर्थंकर होनेवाले श्री महावीर प्रभुके गर्भमें आनेसे छह महीने पहले श्री सिद्धार्थमहाराजके रत्न वगैरहकी वर्षा होना ”
श्री त्रिसला महारानीको सोहलस्वप्नोंका दीखना ४५
उन स्वप्नोंका फल महाराजसे पूछनेको महारानीका राजसभामें जाना ४७
स्वप्नका फल तीर्थंकर पुत्र होना जान बहुत प्रसन्नता ४८
इंद्रकर भेजी हुई देवियोंको माताकी सेवा करना ”
उस अच्युत नामा सोलवें स्वर्गके देवको उन महारानीके गर्भमें तीर्थंकरस्वरूपसे आना ... ४८
सौधर्म इंद्रका आना और गर्भकल्याणकका उत्सव करना ४९

आठवां अधिकार ॥ ८ ॥

देवियोंको जिनमाताकी सेवाकरना ... ”
देवियोंके प्रश्न और जिनमाताके उत्तर ... ५१
तीर्थंकरका जन्म ५३
सौधर्म इन्द्र स्नान करानेके लिये प्रभुको सुमेरु पर्वतपर लेगया ५५

नवमां अधिकार ॥ ९ ॥

तीर्थंकर प्रभुको क्षीरसमुद्रके जलसे स्नान करना ५८
फिर स्तुतिकरके महावीर और वर्धमान ये दो नाम रखना ६१
इंद्रका जन्मकल्याणके उच्छवमें नृत्य करना ६२

दशवां अधिकार ॥ १० ॥

देवदेवियोंको महावीर प्रभुकी सेवा करना ... ६४

महावीर प्रभुको पूर्वजन्मके वृत्तांत जाननेसे वैराग्य होना ६८

ग्यारवां अधिकार ॥ ११ ॥

वैराग्यकी बढानेवाली बारह भावनाओंका चिंतवन ७०

बारवां अधिकार ॥ १२ ॥

महावीर प्रभुके पास लौकांतिक देवोंका आना ७८

महावीर प्रभुको खंका नामके वनमें जाकर आप दीक्षा लेना ८२

तेरवां अधिकार ॥ १३ ॥

स्थाणुनामा रुद्र (महादेव) कर किया गया उपसर्ग सहना ८९

चंदना सतीकर प्रभूको आहार देनेसे बंधनसे छूटना व रत्नादि वर्षा होना ९०

महावीर प्रभुको केवलज्ञान होना ९२

चौदहवां अधिकार ॥ १४ ॥

इंद्रोंका परिवार सहित केवलज्ञान कल्याणका उत्सव करनेको आना ९३

भगवानके समवशरण (सभामंडप) का वर्णन ९६

पंद्रहवां अधिकार ॥ १५ ॥

जिनेंद्रकी छत्र चमरादिसंपदाका वर्णन ... १०३

अर्हंत श्रीमहावीर प्रभुकी तीनपहर बीतजानेपर भी दिव्य ध्वनी नहीं निकालनेसे इंद्रको चिंता होना १०७

फिर ज्ञानसे जानकर गौतम ब्राह्मणको गणधर पदवी योग्य समझना ... ... ,,

फिर वृद्ध ब्राह्मणका भेष रख इंद्रको उस गौतमके पास जाके एक काव्यका अर्थ पूछना ... १०८

काव्यका अर्थ कठिन समझ मानी गौतम विप्रको प्रभुकी सभा मंडपमें आना १०९

वहां मानस्तंभको देख मान दूर करके गौतमकर कीगई प्रभुकी स्तुति १०९

सोलहवां अधिकार ॥ १६ ॥

गौतम स्वामीकर किये गये प्रश्नोंका वर्णन ... ११२

उन प्रश्नोंका भगवानकर दिया सात तत्त्वरूप उत्तर ११४

सत्रहवां अधिकार ॥ १७ ॥

फिर नौ पदार्थोंका व्याख्यानस्वरूप उत्तर ... १२१

अठारहवां अधिकार ॥ १८ ॥

महावीर भगवानकर दिया गया धर्मका उपदेश १३२

उन्नीसवां अधिकार ॥ १९ ॥

श्रीमहावीर प्रभुके समवशरणका राजगृही नगरीके पास विपुलाचल पर्वतपर जाना ... १४५

वहां पर अपने पुत्र अभय कुमार तथा अन्य सर्व प्रजासहित श्रेणिकराजाका आना ... १४६

फिर श्रेणिकराजाको अपने भवोंका सुनना ... ,,

अभय कुमार पुत्रके भवोंका कथन १५०

ग्रंथकारका अंतिम कथन... ... १५४